प्राक्कथन

प्राक्कथन

स्वातंत्र्योत्तर नाट्य साहित्य में डॉ. शंकर शेष का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। उनके नाटक ना केवल रंगमंच पर ख़ेले गये बल्कि दूरदर्शन तथा आकाशवाणी से भी प्रसारित किये गये हैं। जिस कारण शेष जी के नाटक जनसामान्य तक पहुँच सके। मुझे उनके नाट्य साहित्य के यथार्थवादी चित्रण ने अपनी ओर आकर्षित किया । मैंने उनके " बिन बाती के दीप " और " कोमल गांधार " नाटक पढ़े तब नारी विषयक शेष जी की दृष्टि तथा नारी को अभिव्यक्ति देने की उनकी कोशिश आदि ने मुझे झकझोर दिया । तब मैंने उनके सभी नाटकों की नायिकाओं पर शोध कार्य करने का निश्चय कर लिया । साथ ही मेरे गुरुवर्य डॉ. के.पी. शहा जी ने भी इस विषय पर शोधकार्य करने के लिऐ मुझे प्रोत्साहित किया ।

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न थे -

1) शंकर शेष जी का जीवन किस तरह बीता ?

2) उनके नाटकों की नायिकाओं का स्वरुप किस प्रकार का है?

3) उनके नाटकों की नायिकाओं की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं ?

4) उनके नाटकों की नायिकाओं की समस्याएँ कौन-सी हैं ?

इन सभी सवालों के जबाब प्राप्त करने का प्रयास मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध में किया है। अध्ययन के उपरांत जो उत्तर मुझे प्राप्त हुए हैं उन्हें उपसंहार में दे दिया है।

मैंने अपने लघु शोध -प्रबंध को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया है ।

<u>प्रथम अध्याय</u> :- " शंकर शेष : व्यक्तित्व एवम् कृतित्व "

इस अध्याय में शेष जी का जीवन परिचय संक्षेप में दिया है । साथ ही उनके व्यक्तित्व के विविध पहुलुओं पर नजर ड़ाली है। उनके बहुविध साहित्य का " कृतित्व " में परिचय देते हुए उनके बहुमुखी प्रतिभा को जानने की कोशिश की है। अंत में निष्कर्ष दिया गया है।

<u>द्वितीय अध्याय</u> :- " शंकर शेष के नाटकों में चित्रित नायिकाओं का स्वरूप "

इस अध्याय में प्रथम प्राचीन काल में नायिकाओं का स्वरूप और प्रकार कैसे थे ? इसका विश्लेषण किया है। फिर, शेष के नाटकों की नायिकाओं के स्वरूप पर प्रकाश ड़ाला है। उनके नाटकों की नायिकाओं का शैक्षिक, वर्गीय, प्रेमिका, और आर्थिक स्वरूपों में विभाजन कर उनका विवेचन किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिये है।

तृतीय अध्याय :- " शंकर शेष के नाटकों में चित्रित नायिकाओं की विशेषताएँ "

इस अध्याय में शेष के नाटकों की नायिकाओं की विशेषताओं को प्रस्तुत किया है। साथ ही नायिकाओं की विशेषताओं का विस्तार से विवेचन किया है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किये है।

चतुर्थ अध्याय :- " शंकर शेष के नाटकों में चित्रित नायिकाओं की समस्याएँ "

इस अध्याय में शेष के नाटकों की नायिकाओं के जीवन में आनेवाली विभिन्न समस्याओं को प्रस्तुत किया है । तथा उनका विवेचन कर निष्कर्ष प्रस्तुत किये है ।

उपसंहार :-

इसमें मैंने सभी अध्यायों के अध्ययन के बाद प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं । जो लघु शोध -प्रबंध के चार अध्यायों का सार है ।

अंत में परिशिष्ट, आधार ग्रंथ तथा संदर्भ ग्रंथ सूची दर्ज की है ।